PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ४

रज़ा और बादशाह

Author: Subhadra Sen Gupta

Illustrator: Tapas Guha

Translator: Manisha Chaudhry

आज का दिन बड़ा ख़ास था। रज़ा ने अपने सबसे बढ़िया कपड़े पहने हुए थे। आज उसकी मुलाकात एक बड़ी आला हस्ती से होने वाली थी-बादशाह जलालुद्दीन अकबर से! मुग़ल सल्तनत के महान सम्राट!

रज़ा के अब्बा, रहमत खान, भी कोई छोटे-मोटे आदमी नहीं थे। वह बादशाह के शाही दर्ज़ी थे। बादशाह उन्हीं के हाथ के अंगरखे पहनना पसंद करते थे-जी हाँ, चुस्त चूड़ीदार पायजामा और ढीला कोटनुमा कुरता-जिसे अंगरखा कहते हैं। यही थी बादशाह की पसंद की पोशाक।

आज सुबह रज़ा और उसके अब्बा, फ़तेहपुर सीकरी के महल जा रहे थे। बादशाह के गर्मी के मौसम के अंगरखे उन्हें दिखलाने थे। कपड़ों के मामले में राजा साहब काफ़ी नखरैले थे। रहमत खान ने बड़ी मेहनत से अंगरखे बनाये थे-देर रात तक कटाई और सिलाई करी थी। रज़ा ने भी उनका हाथ बँटाया था-सबसे बारीक सुईं और बेहतरीन रेशम के धागे से महीन टाँके लगाये थे।
बसन्त की खिली धूप में चारों ओर फूल हँस रहे थे।

कबूतरों की गुटरगूँ सुनते हुए, दोनों फ़तेहपुर सीकरी के महल पर पहुँचे। भाले लिये दो पहरेदार, फाटक पर तैनात थे।

"मैं हूँ रहमत खान, जहाँपनाह का दर्ज़ी। उनके अंगरखों के नये जोड़े लाया हूँ," रज़ा के अब्बा ने कहा।
बड़ी मूँछों वाले पहरेदार ने भँवें सिकोड़ीं, "क्या बादशाह को मालूम है कि तुम आने वाले हो?"
" जी हुज़ूर, उन्होंने खुद नमूने पसंद किये थे।"
"यहीं ठहरो। मैं शाही खदिमतगार को बुलाता हूँ," पहरेदार ने अन्दर का रुख किया।

पहरेदार एक और आदमी को लेकर आया जिसे देखकर रहमत ने झुक कर सलाम किया, "गर्मी के कपड़े लाया हूँ, धनी जी।"

"अच्छा! आओ मेरे साथ। महाराज अभी सोने के कमरे में हैं। शाही दरबार में जाने से पहले तुमसे मिलेंगे।"

"यह कौन हैं, अब्बू?" रज़ा फुसफुसाया।

"धनी सहि। ख्वाबगाह में काम करते हैं।"

"ख्वाबगाह?"

"बादशाह का निजी महल, जहाँ उनकी बैठक और सोने का कमरा है।"

काफ़ी लम्बा रास्ता था। रज़ा ने चारों तरफ़ देखा तो उसकी आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गईं। मुग़लों के महल कितने सुन्दर थे! पतले नक्काशीदार खम्भे और मेहराब-सब लाल रंग के बालुकाश्म से बने हुए। कहीं कहीं फुलवारी वाले बग़ीचे, जिनमें कमलों से सजे तालाब और झिलमिलाते फव्वारे नज़र आ रहे थे। रज़ा ने मन से सोचा कि जन्नत ऐसी ही होती होगी।

बादशाह के कमरे के दरवाज़े पर इन्तज़ार करते हुए रज़ा ने धनी सिंह को ध्यान से देखा। दर्ज़ी का बेटा होने के नाते सबसे पहले कपड़ों पर नज़र टिकी। लाल और सफ़ेद, फूलदार सूती अंगरखा और स़फेद चूड़ीदार। धनी सिंह की नागरा की जूतियों की नोक अन्दर की तरफ़ उमेठी हुई थी। उनकी कमर पर कपड़े की पट्टी बँधी हुई थी जिसे पटका कहा जाता है। पर रज़ा को सबसे ज़्यादा पसन्द उनकी चटख़ लाल रंग की पगड़ी आई, जिस पर स़फेद और पीले चौरस और बुंदकियों का नमूना था।

"आपकी पगड़ी बड़ी अच्छी है, धनी जी," वह बोला, "बड़ा सुन्दर नमूना है।"
"शुक्रिया! मैं राजपूत हूँ और इस नमूने को मेरे देश में बाँधनी कहते हैं।"

कमरे में घुसते हुए रज़ा का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मेहराबदार दरवाज़ों से धूप अन्दर आ रही थी। नगीनों के रंगों वाला मोटा, रेशमी पर्शियन कालीन, उसकी रोशनी में रंग बिखेर रहा था। कमरे में एक ख़ूबसूरत नक्काशीदार पलंग और दो बड़ी सुन्दर कुर्सियाँ थीं। कम ऊँचे पलंग पर रेशमी ओर सुनहरी गद्दियाँ पड़ी थीं। पर्दे भी रेशमी थे!

रज़ा ने झुक कर सलाम किया और फिर अपने बादशाह की तरफ़ देखा। एक खिदमतगार हाथ में डिब्बा लिये खड़ा था और अकबर उसमें से गहने चुन रहे थे। कद में बहुत लम्बे नहीं थे पर उनके एक तलवारबाज़ के जैसे चौड़े कन्धे थे। बड़ी बड़ी, थोड़ी तिरछी आँखें, नीचे की ओर मुड़ी मूँछें और ओठों के ऊपर एक छोटा सा तिल था।

उनके आने की आहट पाते ही अकबर पलट कर मुस्कराये, ”आओ रहमत! अंगरखे लाये हो? और यह लड़का कौन है तुम्हारे साथ?“

”मेरा बेटा रज़ा, हुज़ूर।“
”क्या तुम भी सिलाई जानते हो, रज़ा?“
”सीख रहा हूँ, हुज़ूर,“ रज़ा ने घबराया-सा जवाब दिया, ”पर कपड़ा काटने में अभी भी गलती हो जाती हैं।“
”सीख जाओगे। तुम्हारे अब्बा सिखिला देंगे तुम्हें,“ अकबर प्यार से बोले।

रहमत ने पोटली खोली और अंगरखे पलंग पर सजा दिये। बेहतरीन मलमल से बने हुए थे और बड़ी बारीक कढ़ाई थी। सभी गर्मी के हल्के रंगों में थे, नींबुई, आसमानी, धानी, हल्का जामनी और झकाझक स़फेद। रज़ा जानता था कि बादशाह का पसंदीदा रंग स़फेद था।

रहमत ने अकबर को एक स़फेद अंगरखा पहनने में मदद करी। धनी सिंह एक बड़ा-सा आईना ले आये और राजा के सामने लेकर खड़े हो गये।

"कढ़ाई अच्छी है और...पहनने में भी आरामदेह है,"
अकबर खुश होकर बोले।

"अब ज़रा पटका बाँधो। देखें कैसा लगता है।"
रहमत ने कई पटके उठाये और अकबर की कमर पर एक आसमानी रंग का पटका
ऐसे बाँधा कि झालरदार सिरे आगे की तरफ़ लटकें।

"नहीं," अकबर अनख कर बोले, "ज़्यादा हल्का रंग है... हमें ज़रा शोख रंग चाहियें।
"

रज़ा और उसके अब्बा ने, एक के बाद एक कई पटके बाँध कर दिखाये-हरा और
पीला, नारंगी और जामनी, पर अकबर को कोई भी न सुहाया।

"हमें ये रंग जँच नहीं रहे, रहमत!" अकबर ज़रा तुनक
कर बोले।

रज़ा ने देखा कि अब्बा के माथे पर परेशानी झलक रही थी। हाय, अगर बादशाह सलामत को पटके पसन्द नहीं आये तो क्या वे सारे कपड़े लौटा देंगे, मुझे फ़ौरन कुछ करना होगा, उसने सोचा।

उसने यहाँ-वहाँ नज़र दौड़ाई और अनायास बोल पड़ा, ”हुज़ूर क्या आप चटख़ लाल पर सफ़ेद और पीली बुंदकियों वाला देखना पसन्द करेंगे?“

”कैसा लाल रंग?“ अकबर हुंकार कर बोले,
”दिखाओ हमें।“
रज़ा ने धनी सिंह की पगड़ी की ओर इशारा किया,
”वैसा लाल?“
”हूँ ...“ अकबर ने धनी सिंह के मूछों वाले चेहरे को घूर कर देखा और कहा, ”ठीक है, देखते हैं।“

रज़ा ने लपक कर धनी सिंह की पगड़ी थामी। उसके लपेटे सीधे करके अकबर की कमर पर बाँध दी। जब तक अकबर आड़े-टेढ़े होकर अपने आप को आईने में निहार रहे थे,

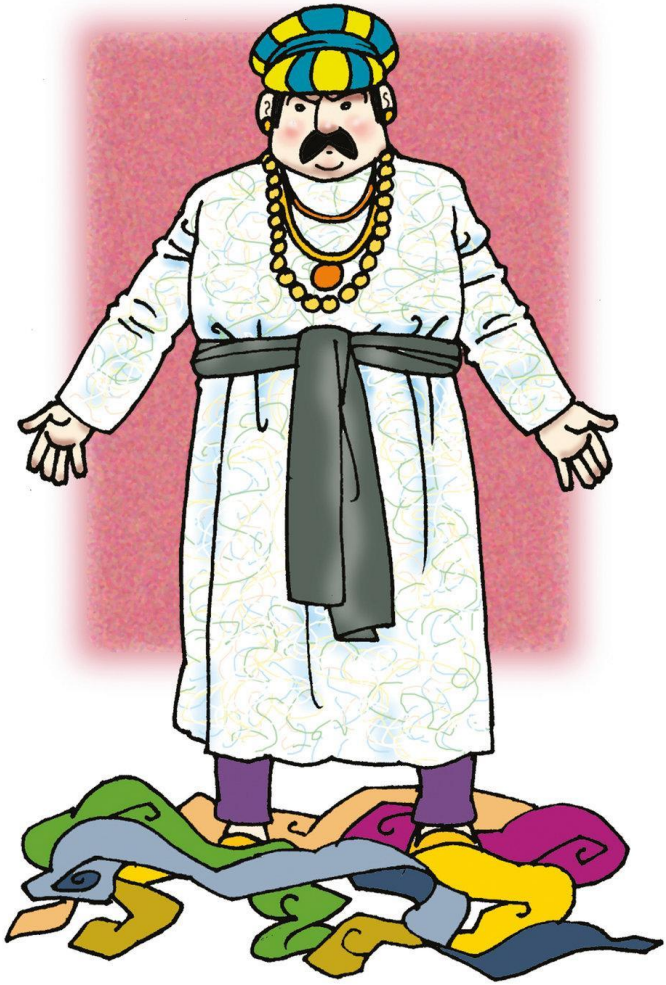

वह साँस रोके खड़ा रहा। उसने देखा कि धनी सहि मुस्करा रहे हैं-शायद उन्हें यह देख कर हँसी आ रही थी कि राजा साहब ने उनकी पगड़ी का पटका बना दिया था!

"यह रंग हमें पसंद आया...और नमूना भी बिल्कुल अलग है," आखिरकार अकबर ने फ़रमाया।

"बाँधनी हुज़ूर...राजपूतों के देश से," रज़ा का जवाब हाज़िर था।

"अच्छा! राजपूत! जैसे हमारी महारानी जोधा बाई!" अकबर मुस्कराये।

"धनी, रहमत को अंगरखों और पटकों की कीमत अदा कर दो। हमें सारे चाहियें।"

"हुज़ूर," रज़ा सँभल कर बोला, "धनी जी को पगड़ी की ज़रूरत पड़ेगी। हमने उनकी वाली तो ले ली है।"

"उन्हें एक पटका दे दो," अकबर ज़ोर से हँसे। "वह धुले से नीले रंग वाला। उनकी पगड़ी तो अब हमने रख ली है।"

इतिहास के कुछ रोचक तथ्य

1. रज़ा, बादशाह अकबर के शासनकाल में अब से 400 साल पहले रहता था। अकबर मुग़ल राजवंश का सबसे महान राजा था। वह एक प्रसिद्ध योद्धा भी था। उसे नये नमूनों के कपड़े पहनने का बहुत शौक़ था। वह पतंगबाज़ी और आम खाने का भी शौकीन था। 2. बाबर, मुग़ल राजवंश का संस्थापक, काबुल का राजा था। उसने 1526 में भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी को पानीपत की लड़ाई में हरा दिया। अकबर, बाबर का पोता था। वह भी एक बड़ा कामयाब सेनापति था और अपने 49 साल के शासन काल में एक भी लड़ाई नहीं हारा।

3. दो मुग़ल बादशाहों ने नये शहर बनवाये। अकबर ने आगरा के पास, फ़तेहपुर सीकरी बनवाया और शाहजहाँ ने दलि्ली में, शाहजहाँनाबाद। फ़तेहपुर सीकरी, आज वीरान पड़ा है पर शाहजहाँनाबाद (आज पुरानी दलि्ली कहलाता है) में आज भी लोग रहते हैं और वहाँ ज़नि्दगी की चहल-पहल बरक़रार है।

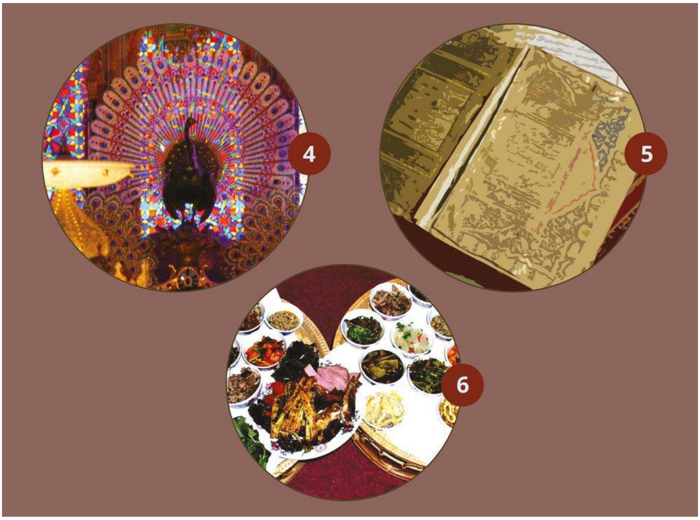

4. शाहजहाँ का मशहूर मयूर सिंहासन (पीकॉक थ्रोन) एक चौकोर चपटा आसन था। उसके हर कोने पर पतले खम्बे थे जो बेशकीमती नगीनों से सजे हुए थे। आसन के ऊपर एक छत्र था जिसके ऊपर नगीनों से जड़ी मोर की आकृति थी। बादशाह इस छत्र के नीचे, रेशमी गद्दियों की टेक लेकर बैठा करता था।

5. कई मुग़ल राजकुमारियाँ बहुत पढ़ी लिखी थीं। गुलबदन बेग़म ने अपने पति, बाबर की जीवनी लिखी। शाहजहाँ की बेटी, जहाँआरा, शायर थीं।

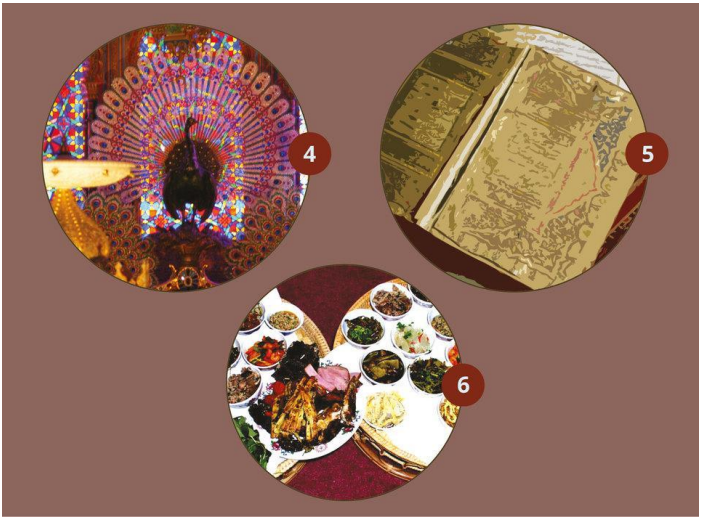

6. मुग़लों के महलों में कई रसोईघर थे। हर रसोईघर से बादशाह के लयि खाना भेजा जाता। ज़ाहरि है कि जब बादशाह सलामत खाने बैठते तो वे तीस कस्मि की लज़ीज़ चीज़ों में से अपनी पसन्द की चीज़ खाते। ओहो! मुँह में पानी भर आता है मुग़लई खाने का नाम आने पर- बरियानी, पुलाओ, कलयिा, कोर्मा-यह सब पकवान मुग़लई रसोईघरों से ही नकिल कर आये हैं।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Story Attribution:

This story: रज़ा और बादशाह is translated by Manisha Chaudhry . The © for this translation lies with Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' Raza Meets the King ' , by Subhadra Sen Gupta . © Pratham Books , 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Pratham Books is a not-for-profit organization that publishes books in multiple Indian languages to promote reading among children. www.prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: Boy and king looking at each other , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Boy and father speaking to a guard , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Boy and men walking through a garden , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: King looking at a box of precious stones , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: Man standing on coloured strips of cloth , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Boy tying a belt around the king , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Pictures of Mughal dynasty , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Pictures of Mughal dynasty , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Peacock throne, ancient books and Mughlai cuisine , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Peacock throne, ancient books and Mughlai cuisine , by Tapas Guha © Pratham Books, 2005. Some rights reserved. Released under

CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

रज़ा और बादशाह (Hindi)

रज़ा के अब्बा, रहमत खान, मुग़ल बादशाह अकबर के शाही दर्ज़ी हैं। रज़ा अब्बा के साथ बादशाह के नये कपड़े पहुँचाने महल गया। तब उसे पता चला कि बादशाह कपड़ों के मामले में ज़रा नखरैले हैं... मुग़ल काल के भारत में, रज़ा की होशियारी की प्यारी सी कहानी!

यह पठन स्तर ४ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो पढ़ने में प्रवीण हैं।

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!